P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विष्णु पुराण के सन्दर्भ में विष्णु की परिकल्पना

प्रतापसिंह बघेल
प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
शहीद भीमा नायक
शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
बड़वानी (म.प्र.) भारत

सारांश

वस्तुतः ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र याने शिव ने त्रिगुणात्मक दृष्टि से याने सत्व, रज और तम के द्वारा 'रज' के रूप मे सृष्टि निर्माण, सत्तव के रूप में रुद्र संसार का संहार करते हैं। इस प्रकार त्रिदेव ही त्रिगुणात्मक रूप से संसार की उत्पत्ति, पालन और विनाश के लिए कारणी भूत है।

मुख्य शब्द : विष्णु पुराण एवं विष्णु की परिकल्पना।

प्रस्तावना

कहा जाता है कि श्री पाराशर मुनि ने विभिन्न विषयों के साथ भगवान् विष्णु और उनके विभिन्न रूपों का वर्णन किया है। संस्कृत में विष्णु के सन्दर्भ में विष्णुचित और श्रीधरी टीका प्रस्तुत की हैं। प्रारंभ में ही पाराशर मुनि से ही 'मैत्रेयजी ने विष्णु के सन्दर्भ में कुछ प्रश्न किये।

"ऊं पराशर मुनिवरं कृतपौर्णाह्निणकक्रियम्।
'मैत्रेयः परिपप्रच्छ प्रणिपतभिवाद्य च।।"

सूतजी बोले– मैत्रेय जी ने नित्यकर्मो से निवृत हुए मुनिवर पराशर जी को प्रणाम कर के उनके चरण छू कर कुछ प्रश्न किये। मैत्रेयजी ने संसार का उपादान कारण क्या है? सम्पूर्ण चराचर किससे उत्पन्न हुआ? समुद्र, पर्वत, देवता आदि की उत्पत्ति, पृथ्वी का अधिष्ठान, सूर्य का परिणाम जैसे अनेक प्रश्न किये।

यह जगत् विष्णु से उत्पन्न हुआ है। उन्हीं में स्थित है। वे ही उसके कर्ता है।

"विष्णोः सकाशादुद्भूतं जगतत्रैव च स्थित'।
स्थितिसंमकर्ताऽसौ जगतोऽस्य जगच्च सः।।"

अर्थात् यह जगत् विष्णु से उत्पन्न हुआ है। उन्हीं में स्थित है, वे ही उसकी स्थिति और लय के कर्ता है तथा यह जगत् भी वे ही है।

श्री पराशरजी कहते हैं कि भगवान् विष्णु ही जो विश्वरूप के रूप में विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के मूल कारण है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु और शिव को तीन रूप बताये हैं, किन्तु वे तीन मात्र तीन रूपों के रूप में होकर भी तीनों एक ही हैं। कार्यकारण उनकी भूमिका के रूप में उन्हीं सृष्टिकर्ता के रूप में ब्रह्मा, पालन के रूप में विष्णु और विलय के रूप में शिव के रूप व्यक्त किये गये हैं। पराशर जी विष्णु पुराण के दूसरे अध्याय में इसी को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि–

"अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्माने।
स दैवरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिश्णवे।।
नमो हिरण्गर्भाय हरये शंकराय।।
वासुदेवाय ताराय सर्गास्थित्यन्तकारिणे।।
एकानेकस्वरूपाय स्थूलसूक्ष्मात्मने नमः।
अव्यक्त व्यक्त रूपाय विष्णवे मुक्ति हेतवे।।
सर्गस्थितिविनाशानां जगतो यो जगन्मयः।
मूल भूतो नस्तस्मै विष्णवे परमात्मने।।"

पराशर जी कहते हैं– जो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर रूप से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के कारण हैं तथा अपने भक्तों को संसार सागर से तारने वाले हैं, उन विकार रहित, शुद्ध अविनाशी, परमात्मा, सर्वदा एक रस, सर्वविजी श्री भगवान् विष्णु को नमस्कार है।

उक्त दूसरे अध्याय के प्रथम दो श्लोक में विष्णु ही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के रूप में सृष्टि के निर्माण, संसार की स्थिति और संहार के रूप में विद्यमान हैं। आगे पराशर जी उसी का विस्तार करते हुए कहते हैं कि– जो एक होकर भी नाना रूप वाले हैं, स्थूल–सूक्ष्म है, अव्यक्त (कारण) और व्यक्त (कार्य) के रूप में है और श्री विष्णु के रूप में ही मुक्ति के कारण है।

उक्त श्लोक 3 और 4 के रूप में यह बात स्पष्ट की गई है कि विष्णु ही तीनों रूप में हैं। वे ही अव्यक्त और व्यक्त हैं, वे ही स्थूल भी है और सूक्ष्म भी हैं। वे विष्णु ही विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के मूल कारण है।

इसी स्थिति को पराशर ने बार–बार व्यक्त किया है–

"विष्णुं ग्रसिष्णुं विश्वस्य स्थितौ तथा प्रभम्।।"

"जो कालस्वरूप से जगत् की उत्पत्ति और स्थिति एवं उसका संहार करने वाले है।"

अर्थात् यह स्पष्ट है कि विष्णु की ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संसार के संहार के कारण है। आगे पराशरजी पुनः इसी तथ्य को व्यक्त करते हैं।

"रूपाणि स्थिति सर्गान्त व्यक्तिसद्भावहेतवः।"

ये भगवान् के विष्णु के रूप पृथक् संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार के प्रकाश तथा उत्पादन में कारण हैं।

"अव्युच्छिन्नास्ततस्त्वेते सर्गस्थित्न्तसंयमाः।।"

कालरूप भगवान् अनादि है, इनका अन्त नहीं है इसलिए संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय भी कभी नहीं रूकते।

"विकासाणु स्वरूपैश्च ब्रह्मरूपादिभिस्तदा।
व्यक्त स्वरूपश्च तथा विष्णुः सर्वेश्वरः।।"

अर्थात् ब्रह्मादि समस्त ईश्वरों के ईश्वर वे विष्णु ही सृष्टि व्यष्टि रूप ब्रह्मादि जीव रूप तथा 'हत्तत्व रूप से स्थित है।

इसी आधार पर विष्णु भगवान् ही सर्वोपरि है और वे ही ब्रह्मा के रूप में तथा शिव के रूप संहार का कार्य करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि विष्णु ही तीनों रूप में सर्वत्र विद्यमान हैं।

"विष्णुर्ब्रह्मस्वरूपेण स्वे'व व्यवस्थितः।।"

अव्यक्त स्वरूप जगत्पति विष्णु ही व्क्त रूप में हिरण्गर्भ रूप से याने ब्रह्मा ही अण्ड रूप में उत्पत्ति का कारण है, किन्तु ही ब्रह्मा भी विष्णु रूप में ही है।

विष्णु भगवान् ही ब्रह्मा के रूप में रजोगुण का आश्रय लेकर संसार की रचना में प्रवृत्त है–यथा

"जुषन् रजो गुणं तत्र स्वं विश्वेश्वरो हरिः।
ब्रह्म भूत्वास्य जगतो विसृष्टौ सम्प्रवर्तते।।"

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि ब्रह्मा ही रजोगुण का आश्रय लेकर सृष्टि का उपक्रम'' करते हैं।

ब्रह्मा रजोगुण के प्रभाव से सृष्टि की रचना करने में प्रवृत्त होते हैं। फिर भगवान् विष्णु कल्पान्त पर्यन्त, युग युग सृष्टि का पालन करते हैं। फिर कल्प का अन्त होने पर दारूण तमः प्रधान रूद्र रूप को धारण कर वे जनार्दन ही समस्त भूतों का भक्षण कर लेते हैं।

"सृष्टं च पात्यनयुग यावत्कल्प विकल्पना।
सत्त्वभूद्भगवान्विष्णुरप्रमेय पराक्रमः।।
तमोद्रेकी च कल्पान्ते रूद्र रूपी जनार्दनः।
मैत्रेयाखिलभूतानि भक्षत्यतिदारुणः।।
भक्षत्वि च भूतानि जगत्येकार्णवीकृते।
नागर्पक्शने शेते च परमेश्वरः।।"

इस प्रकार है स्पष्ट होता है कि ब्रह्मा ही रजोगुण का आश्रय लेकर सृष्टि का उपक्रम'' करते है।

ब्रह्मा रजोगुण के प्रभाव से सृष्टि की रचना करने में प्रवृत्त होते हैं। फिर भगवान् विष्णु कल्पान्त पर्यन्त युग युग तक सृष्टि का पालन करते हैं। फिर कल्प का अन्त होने पर दारूण तमः प्रधान रूद्र रूप को धारण कर वे जनार्दन ही समस्त भूतों का भक्षण कर लेते हैं।

जब ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करते हैं, तब विष्णु सत्वगुण प्रभाव के कारण कल्पान्तपर्वन्त युग का पालन करते हैं। फि'र कल्प का अन्त होने पर अतिदारुण तम प्रधान रूद्र रूप धारण कर वे विष्णु ही समस्त भूतों का भूषण करते हैं। फिर संसार को जलमग्न कर के शेषशय्या पर शयन करते हैं।

इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु और शिव वास्तव में विष्णु रूप में ही रज, सत्त्व और तम' के रूप में ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र रूप धारण करते हैं।

जागने पर वे पुनः ब्रह्मा रूप होकर जगत् की रचना में पुनः प्रवृत्त होते हैं।

इसी को ऋषि पराशर में विष्णु पुराण में जनार्दन विष्णु ही तीनों रूप में संसार की उत्पत्ति, पालन और संहार का कार्य करते है। वे स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि–

"सृष्टिस्थित्न्त करणीं ब्रह्मा विष्णु शिवात्मिका'।
स संज्ञां याति भगवानेक एव जनार्दनः।।"

विष्णु. 2.66

वे प्रभु विष्णु ब्रह्मा होकर सृष्टा के रूप में सृष्टि की रचना करते हैं। विष्णु होकर पालनकर्ता का कर्ा सम्पन्न करते हैं और अन्त में विष्णु ही रुद्र रूप में संहार का कार्य करते हैं।

इसलिए पराशर ने कई बार इन्हीं तीनों की भूमिका को व्यक्त किया है। यथा–

"स एव सृज्यः स च सर्गकर्ता
स एव पात्यति च पाल्यते च।
ब्रह्माद्यवस्थाभिरशेषमूर्ति–
र्विष्णु र्वरिष्ठो वरदो वरेण्यः।।"

अतः यह स्पष्ट है कि भगवान् विष्णु ही ब्रह्मा आदि अवस्थाओं द्वारा रचने वाले हैं, वे ही रचे जाते है, वे ही पालते हैं, वे ही पालित होते हैं तथा वे ही संहार करते हैं।

विष्णु पुराण में विष्णु भगवान् की सर्वश्रेष्ठता स्थापित की गई है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस आलेख के द्वारा ब्रह्म ही त्रिगुणात्मक रूप से सृष्टि निर्माता, सृष्टि पालन कर्ता और सृष्टि संहारकर्ता की भूमिका निष्पन्न करता है। वही एकमात्र ब्रह्म ही नारायण के रूप में त्रिदेवों का सार्वभौमत्व प्रदर्षित करते है।

निष्कर्ष

प्रह्लाद ने विष्णु की अर्चना करते हुए इसी तथ्य की पुष्टि की है

'ब्रह्मत्वे सृजते विश्व स्थितौ पालते पुनः।
रुद्ररूपा कल्पान्ते न'स्तुभ्य त्रिभूते।।'

आप ब्रह्मा रूप से विष्णु की रचना करते हैं फिर उसके स्थित होने पर विष्णु रूप से पालते हैं और अन्त में

रूद्र रूप संहार करते हैं– ऐसे त्रिमूर्तिधारी आप को नमस्कार है।

यह संपूर्ण जगत् सर्वभूत' भगवान् विष्णु का विस्तार है।

'कारणं चास जगतो विष्णुरेव सनातनः।।'

इस जगत् के सनातन कारण भगवान् विष्णु ही है।

विष्णु पुराण के अध्याय 15 वें सोम' कहते हैं 'ब्रह्म ही प्रभु है, ब्रह्म ही सर्वजीव रूप और ब्रह्म ही सकल प्रजा का रक्षक तथा अविनाशी है। वह ब्रह्म ही अव्यय नित्य और अजन्मा है और वही क्षय आदि समस्त विकारों से शून्य विष्णु है।'

'त्वैतद्विष्णुना जगद् वप्तं चराचर'।।'

विष्णु भगवान् से ही यह चराचर व्याप्त है।

श्री भगवान् विष्णु के प्रति भी विभिन्न पुराणों में उनकी उत्पत्ति के संबंध में निम्नलिखित पुराणों के उल्लेख प्रस्तुत किये गये हैं– यथा, लिंगपुराण में भी नारायण भगवान् दिव्य अण्ड के रूप में वर्षों तक जल में रहे। बाद में आदि रूप परमेश्वर ने जल में स्थित अण्ड को दो भागों में विभाजित किया।

'अनेकाब्दं तथा चाप्सु दिव्यं अण्डं व्यवस्थित'।
ततो वर्षसहस्त्रान्ते' द्विधा कृतमजोद्भवम्।।
'त्रिधाभिन्तो ह्हाहं विष्णो ब'ह्मा विष्णुभवाख्यया'

हे विष्णु! में निष्कल परमेश्वर ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र नामों से तीन प्रकार के रूपों सृजन, पालन तथा संहार करते हैं।

वराह पुराण के सातवें अध्याय भी विष्णु भगवान् के नाभि के कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति का उल्लेख है। 'ससर्ज नाभिकमले ब्रह्माणं कमलासन'।'

ब्र'ह्मण्ड पुराण में भी श्री नाराण भगवान् से जल में उत्पन्न होने तथा उससे ब्रह्मा उत्पन्न होने का उल्लेख किया गया है।

'नाराणत्परो व्यक्तादण्ड'व्यक्तसंज्ञित'।
अण्डजस्तु स्वं ब्रह्मा लोकस्तेन कृता स्वय'।।'

नारायण से परे अव्यक्त संज्ञित अण्डा उत्पन्न हुआ तथा उस अण्डे से स्वं ब्रह्मा उत्पन्न हुए। मत्स्य पुराण में भी विष्णु भगवान् ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश– त्रिदेवों को उत्पन्न किया है। वायु पुराण में भी नारायण से ही त्रिदेवों की उत्पत्ति का उल्लेख है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी कृष्ण की 'माया के कारण सृष्टि के साथ ब्रंह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवता, 'मनुष्य आदि उत्पन्न हुए है।

श्रीमदभागवत् में भी कहा गया है किया से त्रिगुणात्मक सृष्टि उत्पन्न की गई है।

'सत्वं रजस्तम् इति निर्गुणरस्य गुणस्त्रः।
स्थितिसर्गनिरोधेषु गृहीता 'माययां विभोः।'

रजोगुण, सत्वगुण और तमोगुण– ये तीनों गुण माया के गुणों से स्वीकार किये गये है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *विष्णु. 1.1*
2. *विष्णु 1.31*
3. *विष्णु. 2.1–4*
4. *विष्णु. 2.7*
5. *विष्णु. 2.17*
6. *विष्णु. 2.26*
7. *विष्णु. 2.56*
8. *विष्णु. 2.32*
9. *विष्णु. 2.61*
10. *विष्णु. 2.61*
11. *विष्णु. 2.62–64*
12. *विष्णु. 2.70*
13. *विष्णु 19.66*
14. *विष्णु. 16.1*
15. *विष्णु. 9.126*
16. *लिंग. 17.66*
17. *लिंग.19.12*
18. *वराह. 7.17*
19. *ब्रह्माण्ड. पूर्व. 1.141, 119*
20. *वायु. 5.38*